E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2022; 4(4): 201-204
Received: 22-10-2022
Accepted: 29-11-2022

अर्चना राय
छात्रा, स्नातकोत्तर समाजशास्त्र विभाग, ल०ना०मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
अर्चना राय
छात्रा, स्नातकोत्तर समाजशास्त्र विभाग, ल०ना०मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

सूचना तकनीक में शिक्षित महिलाएँ एवं उनका गृह-प्रबंधन एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

अर्चना राय

सारांश
परिवार एक ऐसा केन्द्र है जहां व्यक्ति की सभी प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए यथासंभव प्रयास किये जाते हैं। प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति के लिए कुछ-न-कुछ धन अवश्य खर्च करना पड़ता है। प्रत्येक खर्च परिवार की आय में से ही किया जाता है। परिवार में होने वाले इस आय-व्यय को एक सुनियोजित ढंग से लिखित रूप प्रदान करना ही पारिवारिक बजट बनाना कहलाता है। पारिवारिक बजट में परिवार की आय को ध्यान में रखते हुए समस्त नियमित एवं सम्भावित खर्चों को नियोजित रूप में लिख लिया जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि परिवार में चलने वाली आय-व्यय की प्रक्रिया को व्यवस्थित रूप में अंकित कर देने वाला प्रपत्र ही पारिवारिक बजट कहलाता है। यह आय-व्यय का विवरण-प्रपत्र एक निष्ति अवधि के लिए होता है।

कूटशब्द : सूचना तकनीक, गृह-प्रबंधन, पारिवारिक बजट

प्रस्तावना
गृह-प्रबंधक हेतु परिवार के साधनों का अतिशय महत्त्व होता है। चूँकि परिवार के मूल्यों को प्राप्त करने के लिए अलग-अलग पारिवारिक साधनों की जानकारी एवं उपभोग की जानकारी होना काफी आवश्यक है। साधनों का उचित प्रयोग न होने से साधनों तथा समय का अपव्यय होता है एवं परिवार के निर्धारित उद्देश्य भी समय पर पूरे नहीं किए जा सकते हैं। कुशल गृह-प्रबन्ध में स्त्रियों का ज्यादा योगदान होता है। यदि गृहिणी गृह के हर क्रिया-कलाप में सोच-समझकर निर्णय लेती है तो पारिवारिक उद्देश्य की प्राप्ति में सफलता प्राप्त हो सकती है। कुशल गृहिणी समय का इस तरह नियोजन करती है कि अपने अतिरिक्त समय में सिलाई कढ़ाई, बुनाई घर में ही करती है। इसके अतिरिक्त घर के बाहर खाली जमीन में सब्जियाँ उगा कर भी वास्तविक आमदनी में वृद्धि कर सकती है। खाना स्वयं बनाना, घर की सफाई एवं कपड़े स्वयं धोने तथा स्वयं अन्य सेवाओं से परिवार की वास्तविक आमदनी में वृद्धि हो जाती है।

गृह व्यवस्था का अर्थ है घर का रख-रखाव या घर को सुचारू रूप से चलाने के लिये इसकी स्वच्छता, उचित रख-रखाव व व्यवस्था की देख-रेख। जब आप अपने घर को स्वच्छ और व्यवस्थित रखते हैं तब आप इसे अधिक से अधिक सुंदर भी रखना चाहते हैं। आप यह कैसे सुनिश्चित करें कि घर में प्रत्येक वस्तु प्रयोग करने योग्य स्थिति में है, कोई भी वस्तु टुटी फूटी अवस्था में नहीं है और कपड़े फटे पुराने नहीं हैं? सभी नल गीजर बिजली के तार, बल्ब, ट्यूब,

पंखे, प्लग आदि भली-भाँति कार्य कर रहे हों और शॉर्ट सर्किट के कारण आग आदि लगने का भय न हो, इत्यादि। अतः घर की प्रत्येक वस्तु को ठीक और व्यवस्थित रखने की भिन्न-भिन्न प्रक्रियायों को सामूहिक रूप से अच्छी गृह व्यवस्था कहते हैं। दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि गृह व्यवस्था किसी स्थान को स्वच्छ, सुन्दर और व्यवस्थित रखने की प्रक्रिया है ताकि यह प्रसन्नतादायक दिखे और सभी को आमंत्रित करता हुआ लगे चाहे वह व्यक्ति उस स्थान पर रह रहा हो, मिलने के लिए आया हो या फिर कार्य कर रहा हो।

गृह-प्रबन्ध का सामान्य अर्थ है गृह का उचित व्यवस्थापन जिससे परिवार अपने निर्धारित लक्ष्य को सफलता पूर्वक प्राप्त कर सके। परिवार की खुशियाँ, सुख-सृमद्धि, स्वास्थ्य और परिवार के सभी सदस्यों का उज्जवल भविष्य सफल गृह-प्रबन्ध पर ही निर्भर करता है। इसके लिए गृहिणी को घर सभी क्षेत्र, सभी स्तर के साथ-साथ सभी सदस्य की ओर समुचित ध्यान देना होता है। गृहिणी की परिकल्पानाओं तथा सूझ-बूझ के परिणामस्वरूप ही पारिवारिक एवं घरेलू संसाधनों (resources) का सर्वाधिक उपयोग समभव हो सकता है। गृहिणी को उपलब्ध संसाधन मानवीय (human) और अमानवीय (non human) प्रकृति के होते हैं। घरेलू कार्य-कलापों का नियोजन (planning) तथा नियन्त्रण (controlling) इन्हीं संसाधनों पर निर्भर करता है।

सच्चे अर्थों में उपलब्ध साधनों का अधिकतम उपयोग करते हुए पारिवारिक लक्ष्यों की प्राप्ति करना ही सफल गृह-प्रबन्ध है। कहने का आशय गृह-प्रबन्धन जीवन निर्वाहन की एक शैली है। पारिवारिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए जीवन निर्वाहन एक नियोजित शैली में होता है, जिस पर गृहिणी का नियन्त्रण होता है। मानवीय तथा अमानवीय संसाधनों का सर्वाधिक उपयोग जो गृहिणी जितनी ही अधिक सफलता से करती है, उसका प्रबन्धन उतना ही उत्तम होता है।

पारिवारिक लक्ष्यों को उनके महत्त्व, उपयोगिता और आवश्यकता के आधार पर प्रश्रय दिया जाता है औरा संसाधनों का प्रयोग भी उसी के अनुसार किया जाता है। समय शक्ति अथवा ऊर्जा धन, तथा भौतिक वस्तुओं के साथ-साथ पारिवारिक संसाधनों में परिवार के सदस्यों की मनोवृत्ति, रूचियों, कार्यकुशलता तथा दक्षता, ज्ञान तथा सामुदायिक सुविधाओं को महत्त्व दिया जाता है। इतने सारे संसाधनों में क्रमबद्धता स्थापित करना गृहिणी के लिए बहुत ही चुनौती पूर्ण कार्य होता है। इसलिए गृहणी को सूझ-बूझ के साथ इनका नियोजन नियन्त्रण, निष्पादन तथा अन्त में मूल्यांकन करना पड़ता है।

गृह प्रबन्ध के सम्बन्ध में ग्रॉस तथा क्रैंडल का विचार है कि- Management is using what you have to get what you want- मनुष्य जीवन आवश्यकताओं पर आधारित होता है। इन्हीं आवश्यकताओं की पूर्ति करना मनुष्य का लक्ष्य होता है। लक्ष्य को पाने के लिए मनुष्य को उपलब्ध साधनों पर निर्भर करना होता है। उदाहरण के लिए अगर किसी बच्चे को उच्च शिक्षा प्राप्त करनी है तो उसके समय धन, समय, ऊर्जा एवं अन्य भौतिक संसाधनों के साथ-साथ कुछ अन्य संसाधन भी उपलब्ध होने चाहिए, यथा-परिवार के सदस्यों की मनोवृत्ति भी इस दिशा में सकारात्मक होनी चाहिए और परिवार के लोगों को बच्चे की पढ़ाई में रूचि लेना चाहिए। बच्चे को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए अपने ज्ञान को बढ़ाना एवं पठन-पाठन सम्बन्धी अपनी दक्षता को बढ़ाना पड़ता है। इसके लिए उसे कुछ सामुदायिक सुविधाओं यथा- शिक्षण संस्थान, पुस्तकालय आदि की उपलब्धता की भी जरूरत होती है। बच्चे की उच्च शिक्षा की तरह ही परिवार के ढेर सारे लक्ष्य होते हैं जिनकी पूर्ति होनी रहती है। इसके लिए योजना बनाकर नियन्त्रित ढंग से उसके निष्पादन की जरूरत होती है। एक सफल गृहिणी सभी उपलब्ध संसाधनों का अधिकतम उपयोग करते हुए पारिवारिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहती है।

एक कृषि प्रधान देश होने के कारण हमारे यहां सदियों से संयुक्त परिवार की प्रथा प्रचलित रही है, लेकिन औद्योगीकरण और आधुनिकीकरण के हमारे परिवार का सदियों पुराना स्वरूप तेजी से बदला है और संयुक्त परिवार का स्थान एकल परिवार ने ले लिया है। संयुक्त परिवार में गृहिणियों की जिम्मेदारियां बंटी हुई होती थीं। धन प्रबन्ध पूर्ण रूप से घर के मुखिए के हाथ में होता था लेकिन आज गृहिणी के ऊपर उसके परिवार की सम्पूर्ण जिम्मेदारी आ गयी है और उसे प्रतिदिन नई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। घरेलू अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए उसे घर के बाहर नौकरी भी करनी पड़ रही है। इस तरह गृहिणी का कार्य क्षेत्र भी बढ़ गया है।

तेजी से बदलती दुनिया में भाग-दौड़ बढ़ती जा रही है और समय की कमी की शिकायत भी हर कोई करता है। इन परिवर्तनों का प्रभाव हमारे आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन पर विशेष रूप से आये हैं। ये अन्तर इस तथ्य की ओर इंगित करते हैं कि हम परिवर्तनों की चुनौतियों को स्वीकार कर उनके साथ समझौते कर रहे हैं अथवा दूसरे शब्दों में परिवर्तनों के साथ कदम मिलाकर चल रहे हैं। आधुनिक भाग-दौड़ और समयाभाव से पूर्ण जीवन में गृह प्रबन्धन का महत्त्व और भी बढ़ जाता है।

गृह-प्रबन्ध की सफलता का मूल्यांकन अन्य प्रबन्धों के मूल्यांकन से अलग होता है। पारिवारिक खुशियों परिवार के सदस्यों की समृद्धि, उनका स्वस्थ रहना, बच्चे का अच्छे पदों पर स्थापित होना कई सबों की सन्तुष्टि ही गृह प्रबन्धन की सफलता की कसौटी है। गृह-प्रबन्ध की सफलता कई स्तरों और बिन्दुओं पर ऑकी जाती है। परिवार के लोग अगर प्रसन्न और सन्तुष्ट नहीं रहते तो गृह-प्रबन्धन सफल नहीं माना जायेगा। उपलब्ध संसाधनों चाहे वे मानवीय हों या अमानवीय द्वारा घर संचालित नहीं हो पाता तब भी गृह-प्रबन्धन को दोषपूर्ण माना जायेगा, घर के लोग अगर आने तक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल नहीं हो पाते तब भी यह गृह-प्रबन्धक की ही विफलता मानी जायेगी। इस तरह गृह प्रबन्धन की सफलता विभिन्न स्तरों पर आधारित रहती है।

हर स्तर की अपनी माँग होती है तथा उससे सम्बन्धित संसाधन भी अलग होते हैं और परिस्थितियाँ भी भिन्न-भिन्न होती हैं। गृह प्रबन्धक द्वारा लिए गये निर्णय इसमें अह्म भूमिका निभाते हैं। इसलिए हर गृहिणी के लिए यह अनिवार्य हो जाता है कि वह गृह-प्रबन्धन के विविध पक्षों से परिचित हो, हर क्षेत्र में अपना ज्ञान बढ़ाये। सम्यक् ज्ञान के अभाव में निर्णय गलत हो जाते हैं।

सूचना तकनीक और परिवार में परिवर्तन

सूचना तकनीक, आधुनिकीकरण के कारण परिवार का स्वरूप बदल रहा है। जाहिर है कि हाल के वर्षों में मोबाईल, इंटरनेट, फेसबुक, इंस्टाग्राम आदि ने परंपरागत परिवार के रंगरूप में भी परिवर्तन किया है।

कभी आपने इस बात पर गौर किया है कि आज से दस-पंद्रह वर्ष पहले तक आपके बैंक का काम कैसे होता था, बच्चों के स्कूल कॉलेज में एडमिशन फॉर्म कैसे भरे जाते थे, उनका रिजल्ट कैसे देखा जाता था, आप रेलवे का रिजर्वेशन कैसे करवाती थीं, ऑफिस में कामकाज का तरीका कैसा था, शॉपिंग कैसे होती थी.. न जाने ऐसे ही कितने सवालों की लंबी सूची है, जिनका जवाब आज के संदर्भ में बिलकुल बदल गया है।

ग्लोबलाइजेशन, विज्ञान-तकनीक के क्षेत्र में तेजी से आ रहे बदलाव और सूचना क्रांति ने भारतीय समाज को इस तरह प्रभावित किया है कि कुछ वर्षो में ही भारतीय समाज और जीवनशैली में इतना जबर्दस्त बदलाव आ गया है कि उसका स्पष्ट प्रभाव जीवन के हर क्षेत्र में नजर आता है। चाहे वह रहन-सहन और खानपान की शैली हो या फिर लोगों के कामकाज और सोचने का तरीका। पहले की तुलना में सब कुछ बहुत तेजी से बदल रहा है। बदलाव की इस दौड़ में समाज का हर वर्ग पूरे जोशखरोश के साथ शमिल है क्योंकि सभी को यह मालूम है कि आज जो इंसान वक्त के साथ कदम मिलाकर नहीं चलेगा वह पिछड़ जाएगा।

हमारी जीवनशैली पर किन बातों ने सबसे अधिक प्रभाव डाला है, आइए डालते है उन पर एक नजर। ज्यादा पुरानी बात नहीं है। 90 के दशक तक गिने-चुने लोगों के पास ही मोबाइल होता था और इनकमिंग कॉल्स भी पेड होती थीं। किसी को भी लोग अपना मोबाइल नंबर बताने से हिचकिचाते थे। पर अब मोबाइल समाज के हर तबके के लिए सर्वसुलभ है। आज आप अपने घर पर काम करने वाली घरेलू नौकरानी के मोबाइल पर फोन करके उससे आसानी पूछ सकती है कि उसके आने में अभी कितनी देर है। मोबाइल से एस.एम.एस. की नई संस्कृति विकसित हुई है, जो युवाओं के बीच बेहद लोकप्रिय है। क्योंकि इससे कम खर्च और कम समय में आप दूसरों तक अपना संदेश पहुंचा सकते है। इसके जरिये एक-दूसरे को बधाई संदेश और जोक्स भेजने का चलन तो पुराना हो चुका है। अब युवाओं के बीच मोबाइल के जरिये चौटिंग काफी लोकप्रिय हो रहा है। फोटो खींचने, रिकॉर्डिग करने और गाने सुनने के लिए तो मोबाइल का इस्तेमाल होता ही है। अब 4जी एवं 5जी मोबाइल उपलब्ध है, जिनमे इन फीचर्स के अलावा कई नई सुविधाएं उपलब्ध हैं और यह आपके लिए कंप्यूटर का भी काम करता है।

मोबाइल ने युवाओं के बीच प्रेम की अभिव्यक्ति को भी बहुत आसान बना दिया है। इस संदर्भ में 36 वर्षीय आई.टी. प्रोफेशनल नितिन जोशी कहते है, 'एक दशक पहले अगर किसी लड़की को 'आई लव यू' बोलना होता था तो हम दस बार सोचकर भी हिम्मत नहीं जुटा पाते थे। लेकिन मोबाइल के कारण आज के युवाओं के लिए यह बहुत आसान हो गया है।'

याद कीजिए जब पूरे ऑफिस में सिर्फ एक अदद कंप्यूटर होता था। जिस पर बारी-बारी से सभी अपना हाथ आजमाते थे। कंप्यूटर तब एक हौवा हुआ करता था, हमेशा लोगों के मन में यही डर बना रहता था कि सिस्टम छूते ही कहीं कोई गड़बड़ी न हो जाए। इसमें कोई ताज्जुब नहीं कि विशालकाय और ब्लैक एंड व्हाइट स्क्रीन वाले कंप्यूटर्स जल्द ही म्यूजियम की शोभा बढ़ाने लगेंगे। कलर्ड टीएफटी मॉनिटर और आधुनिकतम सॉफ्टवेयर्स से लैस कंप्यूटर अब हमारी जरूरत बन चुके है। कवि योगेन्द्र मौद्गिल कहते है, 'अब वे दिन लद गए जब लेखक और कवि लिखने के लिए कागज और कलम पर आश्रित रहते थे। पिछले आठ वर्षो से मैंने लिखने का हाइटेक तरीका अपना लिया है, जब सारी दुनिया आगे बढ़ रही है तो

हम क्यों पीछे रहे। इससे हम अपनी रचना का बड़ी आसानी से संपादन कर सकते है और उसे सुरक्षित रख सकते है। अब मैं लंबी यात्रा के दौरान मैं आराम से लेखन कार्य कर पाता हूँ।' अब पॉम टॉप कंप्यूटर ने जीवन को और भी आसान बना दिया। आपकी हथेलियों के बीच समा जाने वाले इस छोटे कंप्यूटर से आप जब और जहां चाहे वहां बैठ कर अपने ऑफिस के सारे काम निबटा सकते है। आज कंप्यूटर समाज के हर वर्ग की जरूरत बन चुका है गुजरात और मध्य प्रदेश के कुछ गांवों में स्वयंसेवी संस्थाओं में काम करने वाली अल्पशिक्षित स्त्रियां भी अपने कामकाज के लिए कंप्यूटर का इस्तेमाल करने लगी है। यह बदलाव निश्चय ही सुखद है।

इंटरनेट के माध्यम से आने वाली सूचना क्रांति ने समय और दूरी की सारी सीमाओं को तोड़ दिया है। सबसे बड़ी बात यह है कि इसने हमारी प्रोफेशनल लाइफ को ज्यादा आसान और व्यवस्थित बना दिया है। अब पहले की तरह बिजली के बिल का भुगतान, रेलवे के रिजर्वेशन और एल.आई.सी. का प्रीमियम जमा करने के लिए आपको घंटों लाइन में लगने की जरूरत नहीं है। इंटरनेट बैंकिंग से आपका यह काम मिनटों में नाममात्र के खर्च से पूरा हो जाता है। स्कूल कॉलेज में एडमिशन के लिए भी अब आसानी से ऑनलाइन आवेदन पत्र दाखिल किए जा सकते है। हाई स्कूल और कॉलेज के स्टूडेट आसानी से अपना रिजल्ट इंटरनेट पर देख सकते है। ऐसा नहीं है इस आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल सिर्फ युवा पीढ़ी ही करती है। बल्कि आजकल बड़ी तेजी से बुजुर्ग भी इंटरनेट का इस्तेमाल सीख रहे है। दिल्ली की 19 वर्षीया स्वाति रंगराजन कहती है, 'पिछले वर्ष जब मेरी दादी हमारे घर पर आई थीं तब मैंने उन्हे इंटरनेट का इस्तेमाल सिखा दिया था। अब वह चेन्नई जाकर वहां से मेरे साथ अकसर चौटिंग करती है।' इंटरनेट की सोशल नेटवर्किग साइट्स और ब्लॉगिंग की सुविधा ने दूर बैठे लोगों के बीच संवाद कायम करने और भावनाओं की अभिव्यक्ति की पूरी आजादी दी है। आज इंटरनेट पर फेसबुक और इंस्टाग्राम जैसे कई सोशल नेटवर्किग वेब साइट्स मौजूद है, जिनके माध्यम से आप अपने स्कूल-कॉलेज के पुराने दोस्तों के साथ दोबारा संवाद स्थापित कर सकते है। इन दिनों भले ही आर्थिक मंदी का दौर चल रहा हो लेकिन पिछले एक दशक में विदेशी और देशी बैंकों ने जहां एटीएम मशीनों के माध्यम से बैंकिंग प्रणाली को आम लोगों के लिए सुविधाजनक बनाया है, वहीं ईएमआई के माध्यम से आसान किस्तों पर लोन उपलब्ध कराया है। जिससे लोगों की जीवनशैली में बहुत तेजी से बदलाव आया। पहले लोग रिटायरमेंट के बाद अपनी सारी जमा पूंजी लगाकर मकान या फ्लैट ले पाते थे, लेकिन अब युवाओं के लिए आरामदायक जीवन की सारी सुख-सुविधाएं जुटाना बेहद आसान हो गया है। इससे निम्न मध्यम वर्ग तेजी से मध्यम और मध्यम वर्ग उच्च मध्यम वर्ग में प्रवेश कर रहा है। आज अच्छी नौकरी करने वाला 25 वर्ष का युवक भी शादी करने से पहले ही अपने लिए फ्लैट और कार खरीद लेता है। पहले इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। कुल मिलाकर इससे आम लोगों का जीवन स्तर तेजी से ऊपर की ओर उठ रहा है।

निष्कर्ष

पिछले दस वर्षो में आम लोगों के बीच सेहत और फिटनेस को लेकर काफी जागरूकता आ गई है। पहले सिर्फ महानगरों में गिने-चुने जिम होते थे और उन तक सिर्फ उच्चवर्ग के लोगों की पहुंच होती थी। आज हर छोटे-बड़े शहर में हेल्थ क्लब और जिम आसानी से देखे जा सकते है। जहां वर्कआउट करने वाले लोगों में स्त्रियों की संख्या बहुत ज्यादा होती है। इसी तरह लोगों के खानपान की शैली बहुत तेजी से बदल गई है। आज लोग कम कैलोरी वाली स्वास्थ्यवर्धक चीजों, जैसे ऑर्गेनिक फल-सब्जियां, अनाज, लौ फैट चीज, मक्खन, ब्राउन ब्रेड, शुगर फ्री मिठाइयां रोस्टेड नमकीन आदि आज के शहरी मध्यम वर्ग के भोजन में शामिल हो चुका है। अपार्टमेंट संस्कृति बढ़ती आबादी और जगह की कमी ने सिर्फ दिल्ली-मुंबई जैसे महानगरों में ही नहीं बल्कि लखनऊ-पटना जैसे मंझोले आकार के शहरों में भी लोगों को अपार्टमेंट में रहने पर मजबूर कर दिया है। यह बहुत बड़ा बदलाव है क्योंकि जहां हम रहते है, उस वातावरण का गहरा प्रभाव हमारे पूरे व्यक्तित्व पर पड़ता है।

संदर्भ-सूची

1. ओबराय, पैट्रिका, 1994, फैमिली, किनसिप एण्ड मैरिज इन इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, पृ0 52
2. ग्रॉस तथा क्रैडल, 2004, परिवार, मैकमिलन, पृ0 52
3. वहीं, पृ0 55
4. राव, एम0एस0ए0, 2018, अर्बन सोषियोलॉजी इन इंडिया: रिडर्स एण्ड सोर्स बुक, ओरियन्ट लौंगमेन, दिल्ली, पृ0 45
5. वहीं, पृ0 46